बुकर टी. वाशिंगटन

थॉमस हैंपर

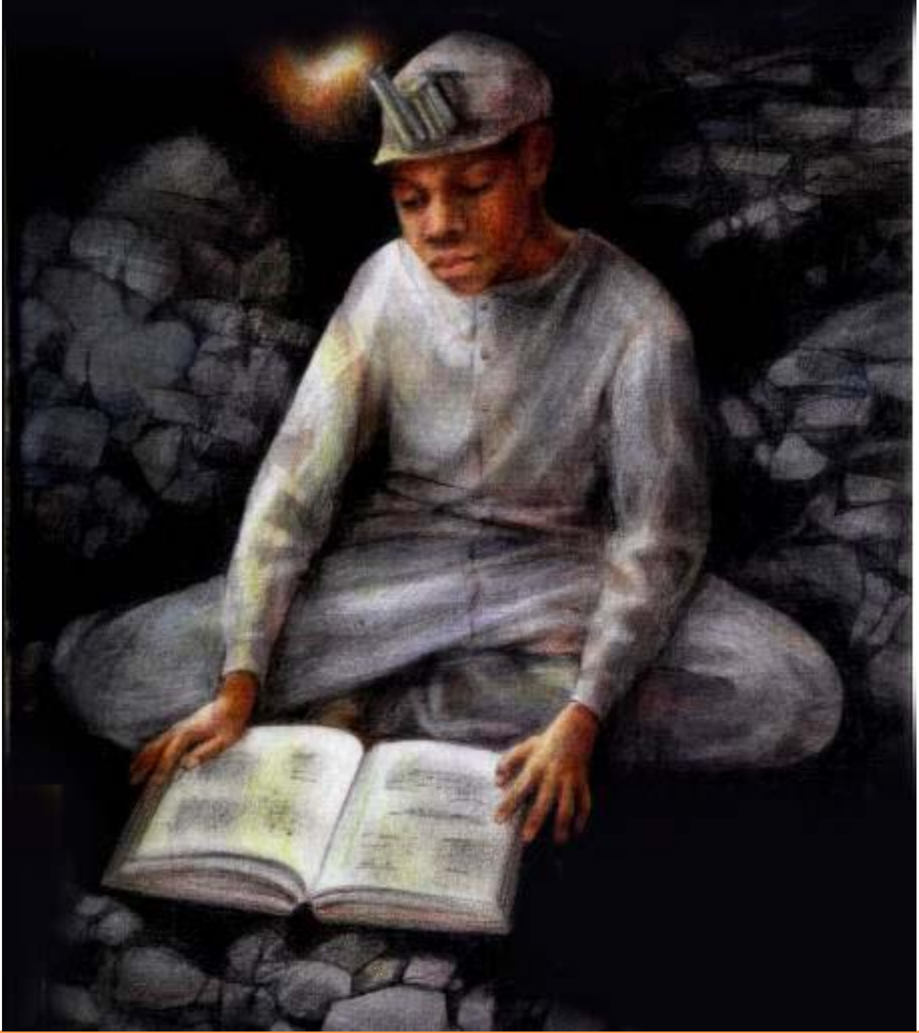

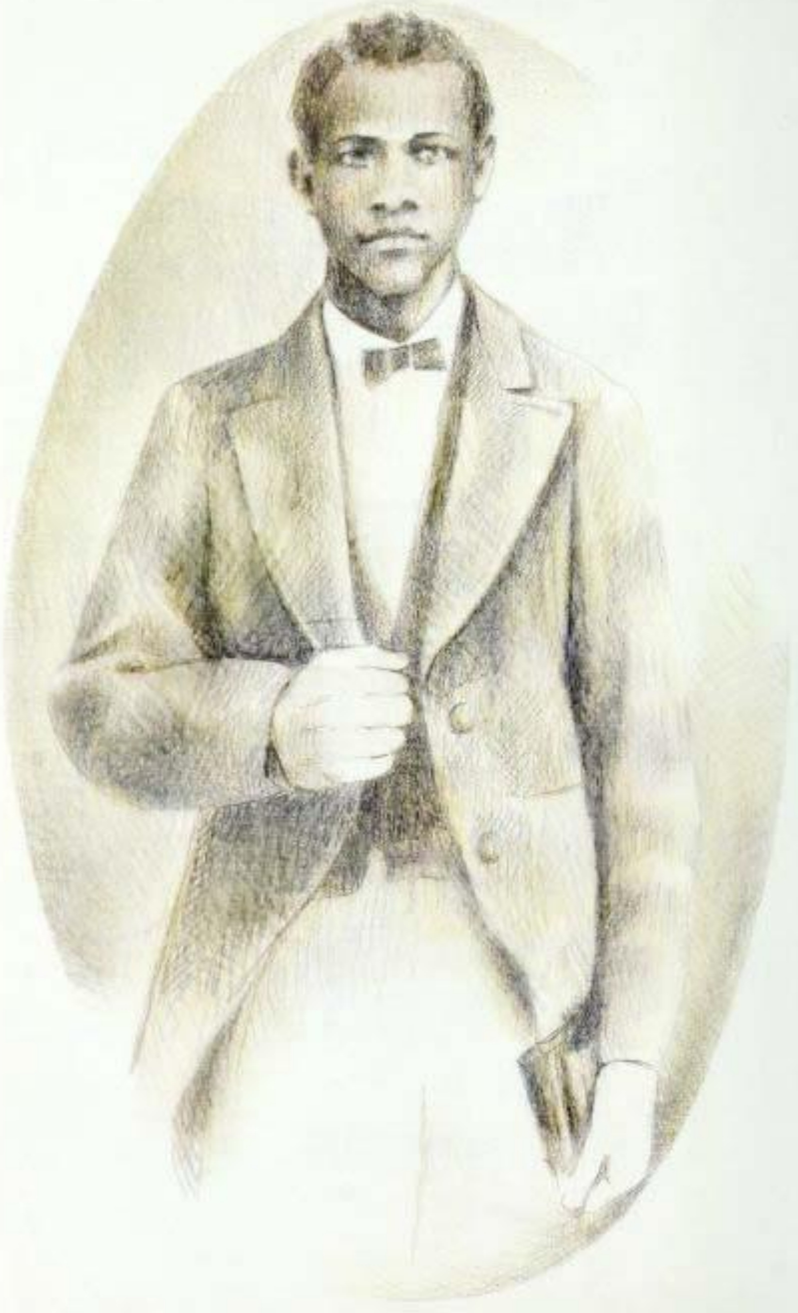

बुकर टी. वाशिंगटन

थॉमस हैंपर

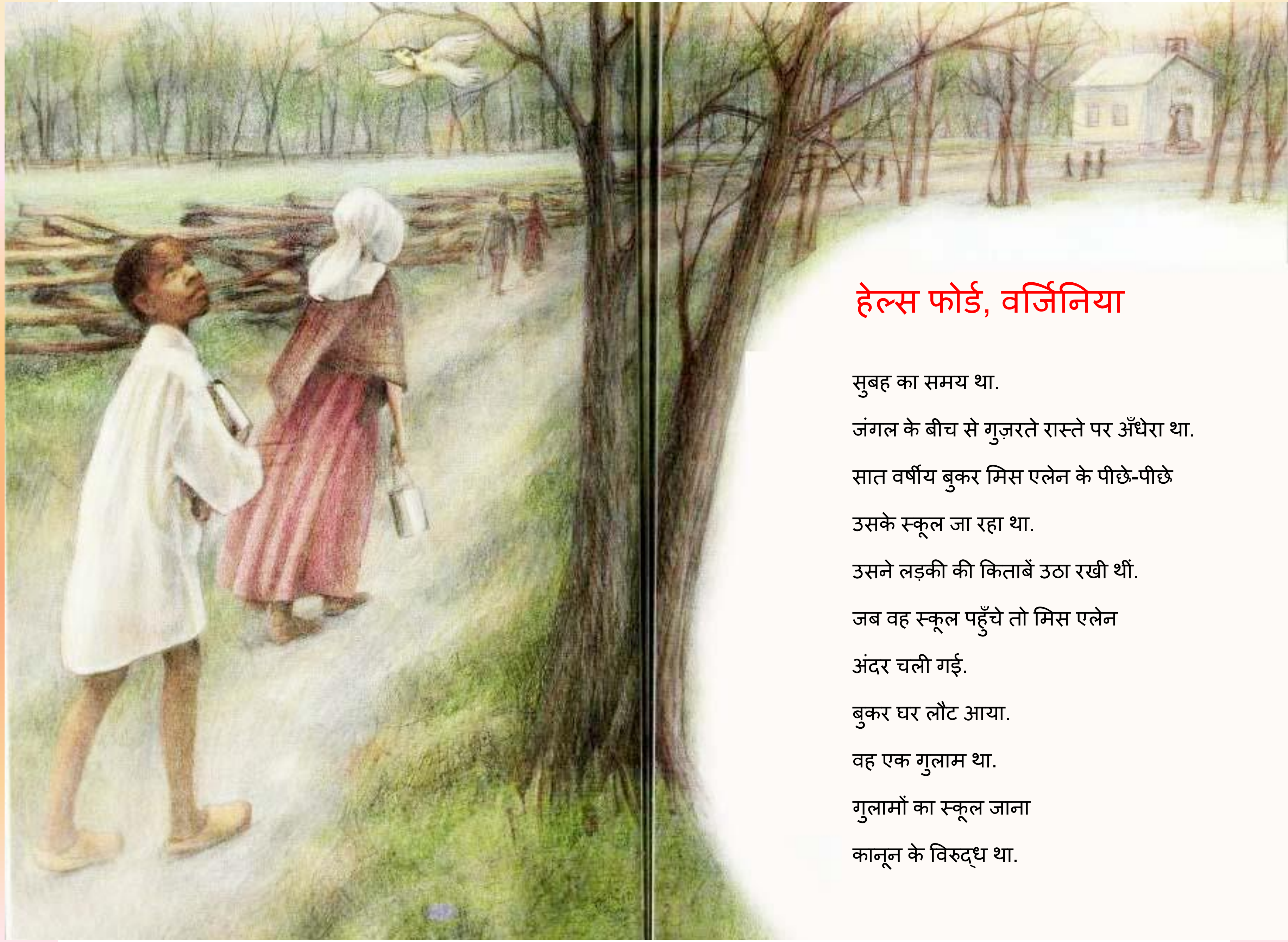

हेल्स फोर्ड, वर्जिनिया

सुबह का समय था.

जंगल के बीच से गुज़रते रास्ते पर अँधेरा था.

सात वर्षीय बुकर मिस एलेन के पीछे-पीछे

उसके स्कूल जा रहा था.

उसने लड़की की किताबें उठा रखी थीं.

जब वह स्कूल पहुँचे तो मिस एलेन

अंदर चली गई.

बुकर घर लौट आया.

वह एक गुलाम था.

गुलामों का स्कूल जाना

कानून के विरुद्ध था.

बुकर वर्जिनिया के एक फार्म में रहता था.

गुलाम के रूप में उसे वही करना पड़ता था

जो उसका स्वामी उसे करने को कहता था.

मिस एलेन उसके स्वामी की बेटी थी.

कभी-कभी बुकर उसकी किताबें ले जाता था.

अधिकतर समय वह खेतों में काम कर रहे

मज़दूरों के लिए पानी ले जाता था.

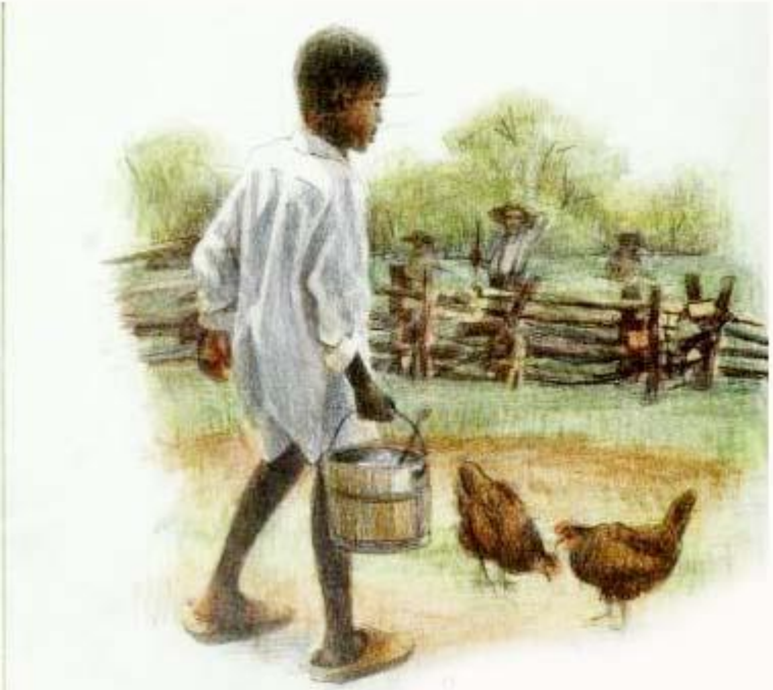

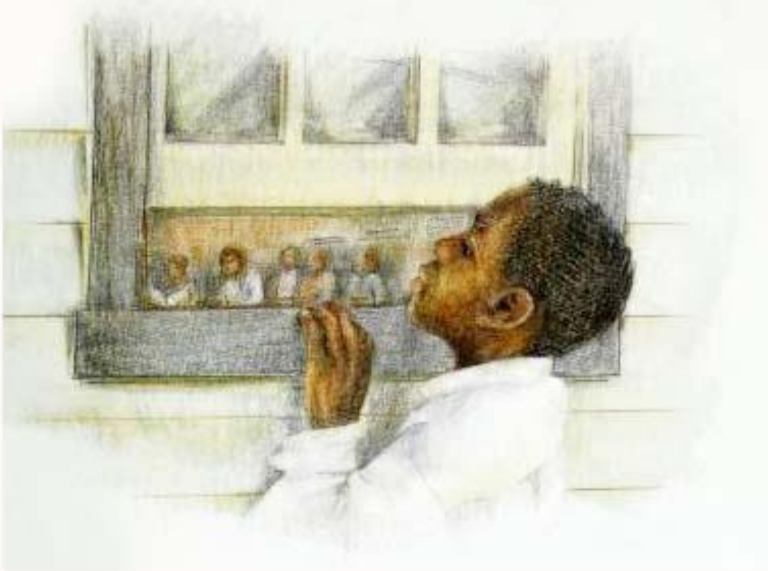

बुकर की इच्छा थी कि वह स्कूल जाए.

उसने श्वेत लड़के और लड़कियों को

स्कूल में पढ़ते देखा था.

वह भी स्कूल के डेस्क पर बैठना और

किताबें पढ़ना चाहता था.

वह प्रश्नों के उत्तर खोजना और सारी कक्षा

को वो उत्तर बताना चाहता था.

वह अखबारों और साइन बोर्ड पढ़ना

चाहता था और लोगों को बताना चाहता था

कि उन पर छपे काले अक्षरों का अर्थ क्या था.

जब बुकर नौ वर्ष का था तब
एक आदमी उनके फार्म में आया.
उसकी बात सुनने के लिए सभी
गुलामों को बुलाया गया.
बुकर अपनी माँ, अपने भाई और
अपनी बहन के साथ खड़ा था.
उस आदमी ने बताया कि सिविल वॉर
समाप्त हो गई थी.
अमरीका में सब गुलाम अब मुक्त थे.
प्रसन्नता से लोग चिल्लाने लगे.
बुकर की माँ ने झुक कर अपने
बच्चों को प्यार किया.
इस दिन के लिए उसने ईश्वर से
प्रार्थना की थी, उसने कहा.
बुकर के परिवार ने शीघ्र ही फार्म छोड़
दिया और पश्चिम वर्जिनिया चले गये.
मुक्त होने के बाद वह अपना जीवन
नये सिरे से शुरू करना चाहते थे.

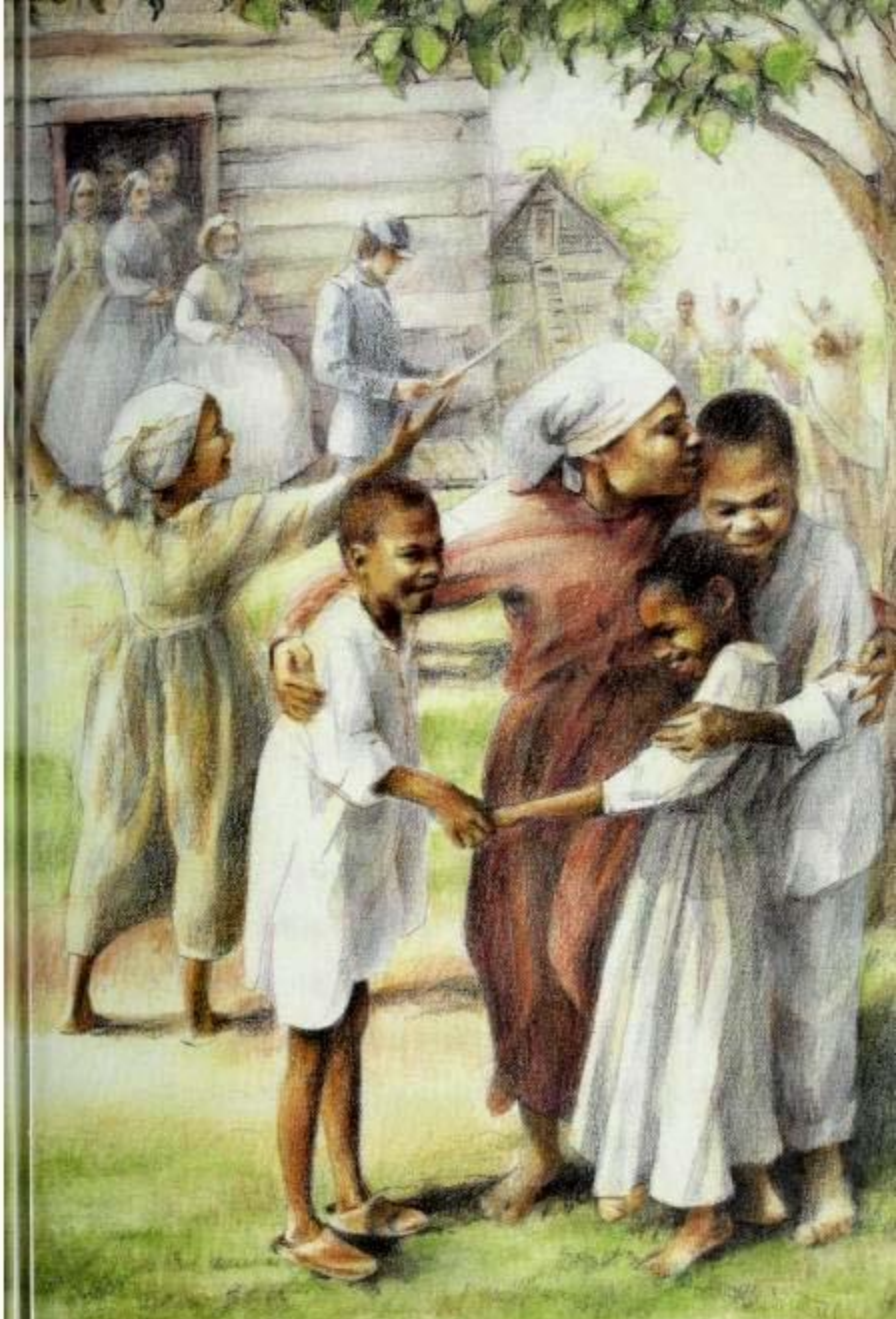

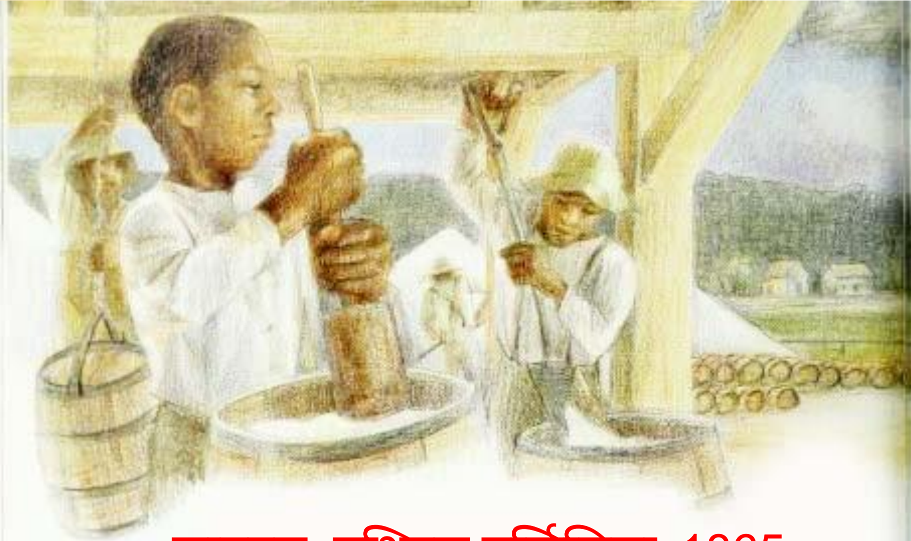

माल्डन, पश्चिम वर्जिनिया, 1865

बुकर के लिए गुलामी से मुक्ति का एक ही अर्थ था.

अब वह स्कूल जा सकता था.

उसके सौतेले पिता का विचार अलग था.

परिवार गरीब था और

उन्हें पैसों की आवश्यकता थी.

बुकर के सौतेले पिता बुकर और उसके भाई

को काम करने के लिए नमक की खान में ले गये.

वह नमक को पीपों में भरते थे.

वह पीपों में नमक कूट-कूट कर भरते थे.

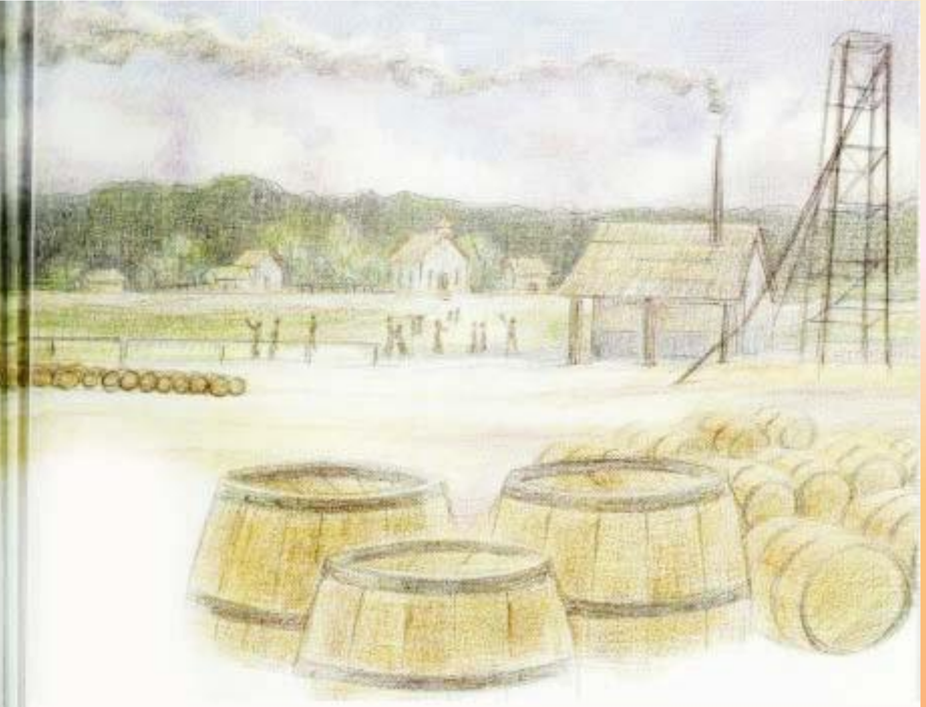

काम कठिन और बहुत ज़्यादा था.

वह सुबह चार बजे काम शुरू करते थे

और अँधेरा होने तक काम करते थे .

सबसे बुरी बात थी कि बुकर देख सकता था.

जहाँ वह काम करता था वहाँ से लड़के और

लड़कियों को स्कूल जाते देख सकता था.

बुकर कामना करता कि वह भी

स्कूल जा रहे बच्चों के साथ होता.

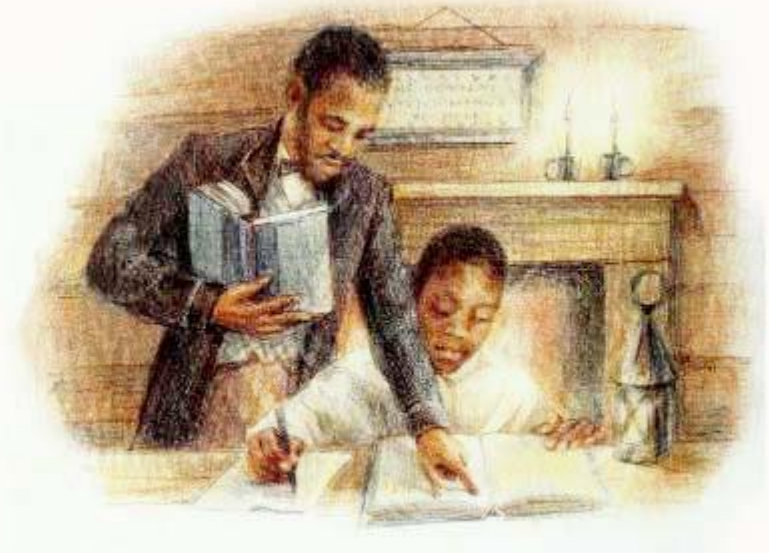

बुकर ने निश्चय किया कि वह स्वयं पढ़ेगा.

उसने एक किताब से वर्णमाला सीखी.

शीघ्र ही उसकी माँ ने स्कूल के

एक अध्यापक से बात की.

अध्यापक ने बुकर के काम से लौटने के बाद

रात में उसकी सहायता करने का आश्वासन दिया.

बुकर कठिन परिश्रम करता और तुरंत सीख जाता.

लेकिन वह अब भी अन्य बच्चों की तरह

एक स्कूल जाना चाहता था.

जब बुकर लगभग बारह वर्ष का हुआ तो

वह एक कोयले की खान में काम करने लगा.

भूमिगत सुरंग में वह कोयला खोदता.

खान में अँधेरा था और वह डरावनी थी.

किसी भी पल वह ढह सकती थी या

उसमें विस्फोट हो सकता था.

बुकर खान के अंदर भी किताब ले आता था.

काम के दौरान जब भी उसे अवसर मिलता

वह किताब पढ़ता था.

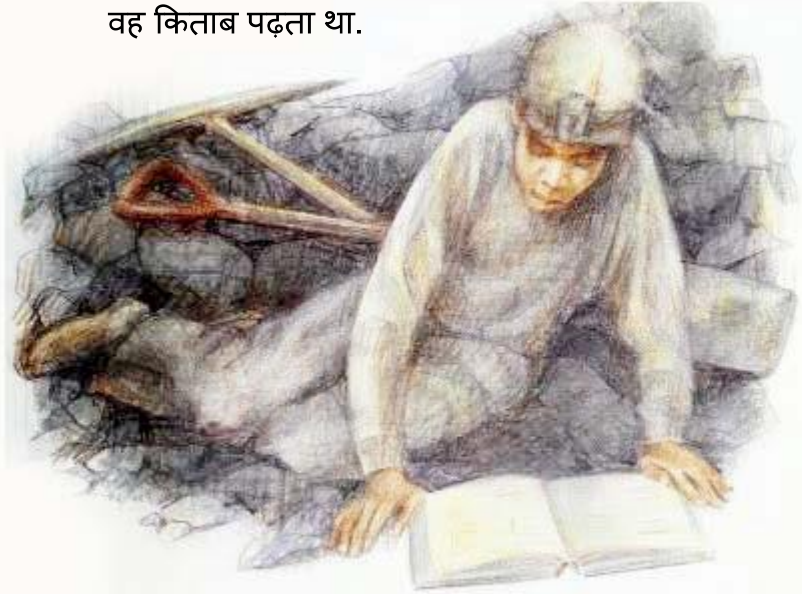

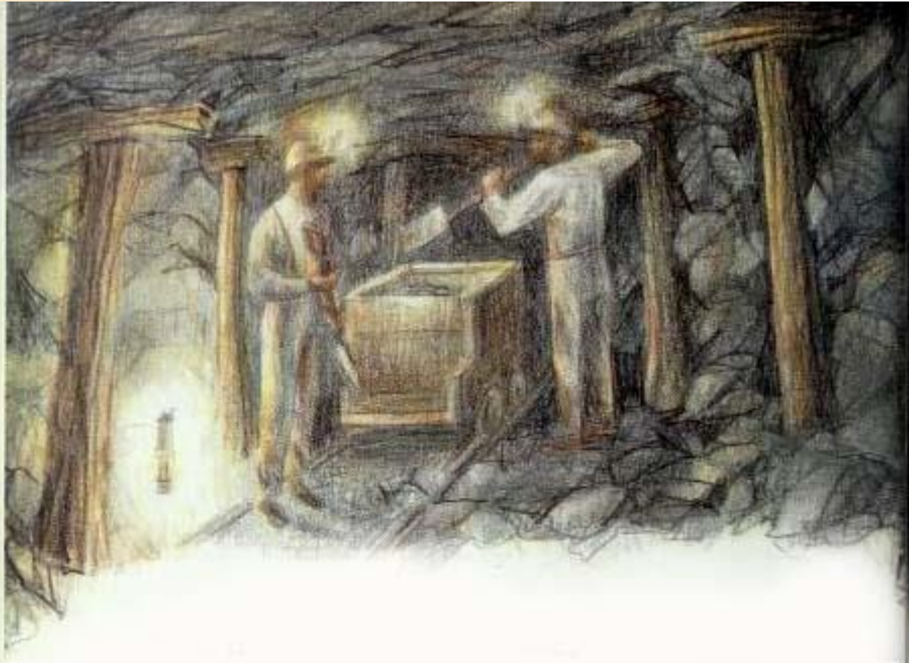

एक दिन खान के अँधियारे में बुकर ने दो
लोगों को आपस में बातें करते सुना.
वह एक नये स्कूल के बारे में बात कर रहे थे
जो अश्वेत अमरीकियों के लिए था.
इसका नाम हैम्पटन इंस्टिट्यूट था.
जिन लड़कों के पास पैसे न थे वह भी
इस स्कूल में पढ़ने के लिए जा सकते थे.
पढ़ाई का खर्चा देने के लिए ऐसे लड़के
स्कूल में काम कर सकते थे.

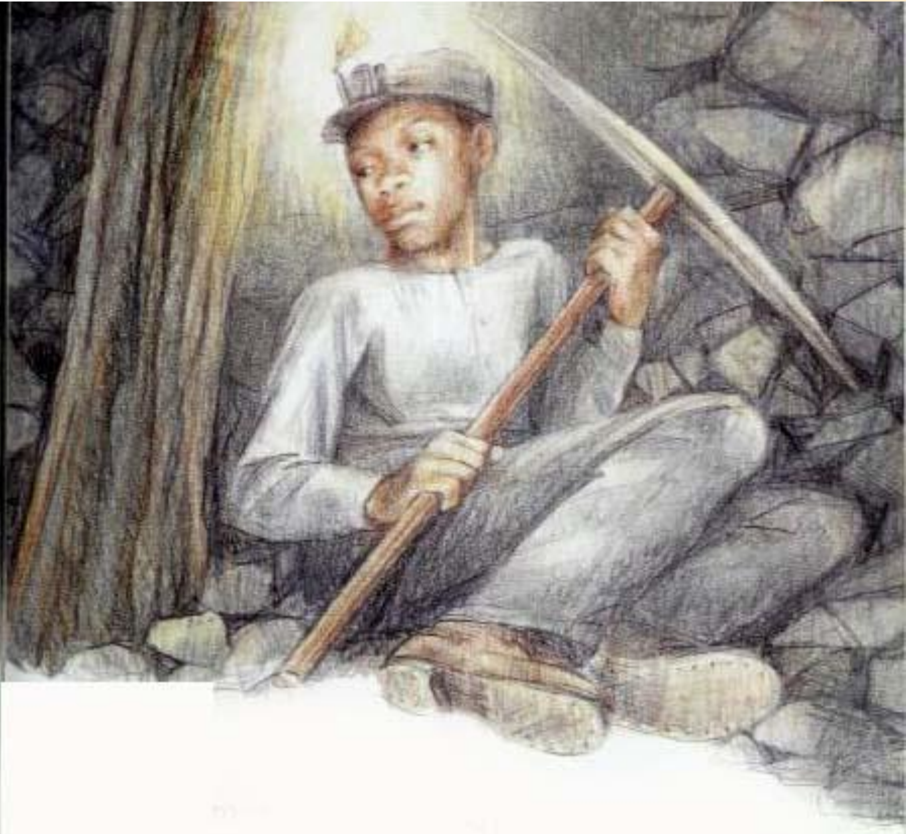

आदमी धीमी आवाज़ में बातें कर रहे थे
लेकिन उनके बातें बुकर के मन में घर कर रही थी.
उसे पता न था कि हैम्पटन कहाँ था
और वहाँ कैसे जाया जा सकता था.
वह तो बस इतना जनता था कि
किसी न किसी तरह उसे वहाँ जाना था.

बुकर ने अपने माता-पिता से पूछा कि
क्या वह हैम्पटन जा सकता था,
लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया. जो पैसे
वह कमाता था उसकी उन्हें अभी भी ज़रूरत थी.
इसलिए बुकर खान में काम करता रहा और
रात में पढ़ाई करता था.
कुछ माह बाद बुकर को एक काम
के बारे में पता लगा.
मिसेज़ वाइयोला रफ्फ्नर को
एक नौकर की ज़रूरत थी.
बुकर ने सुना था कि वह बहुत कठोर थीं
लेकिन वह खान से झुटकारा चाहता था,
इसलिए उसने यह काम स्वीकार कर लिया.

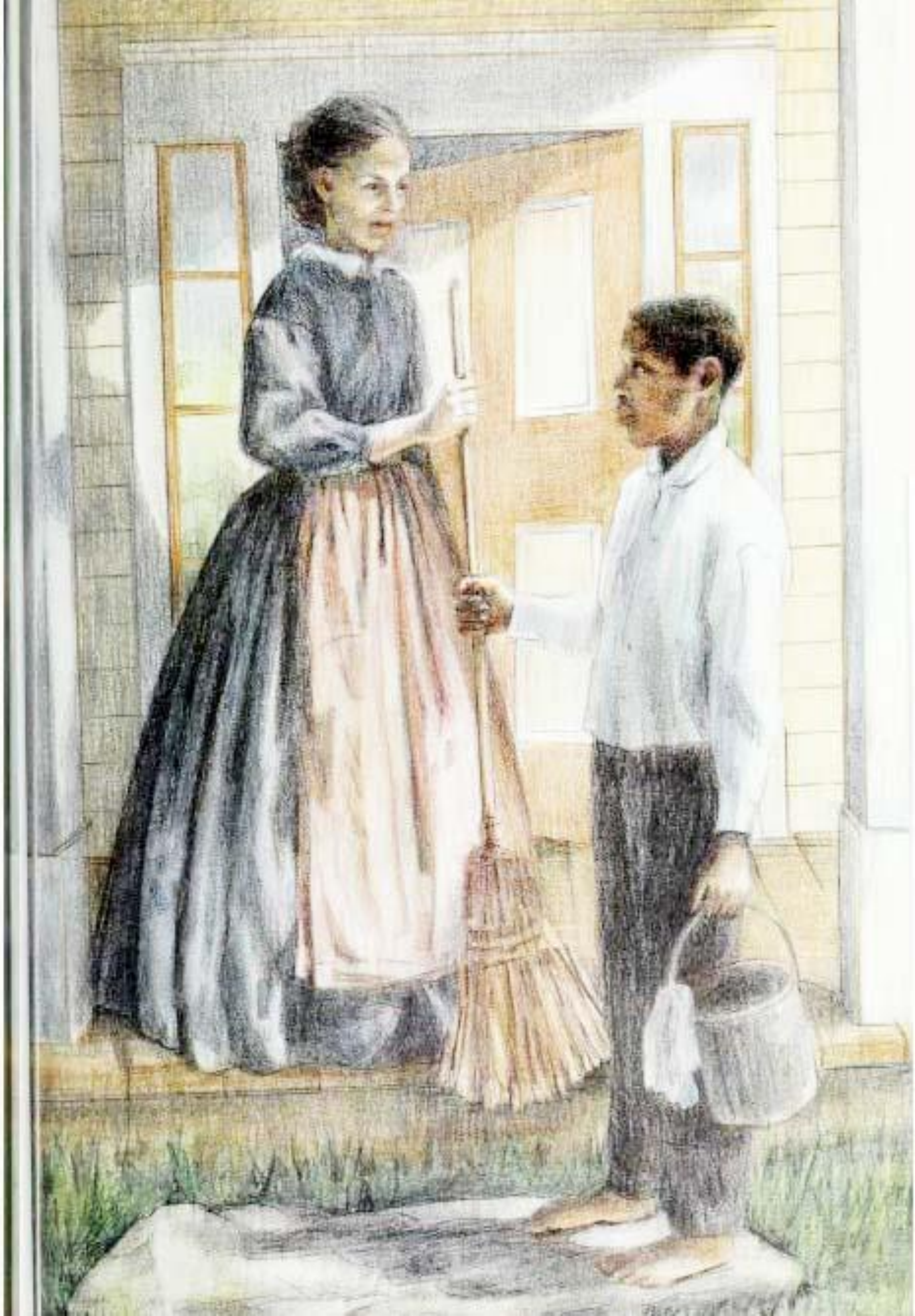

मिसेज़ रफ्फ्नर उतनी ही कठोर थी

जितना लोग कहते थे.

जब बुकर फर्श को साफ़ करता तो वह कहती

उसने अच्छे से सफाई न की थी.

उसने कोनों से धूल साफ़ न की थी.

जब बुकर बगीचे से पत्ते हटाता तो वह

उसे यहाँ-वहाँ गिरे छोटे-छोटे पत्ते दिखाती.

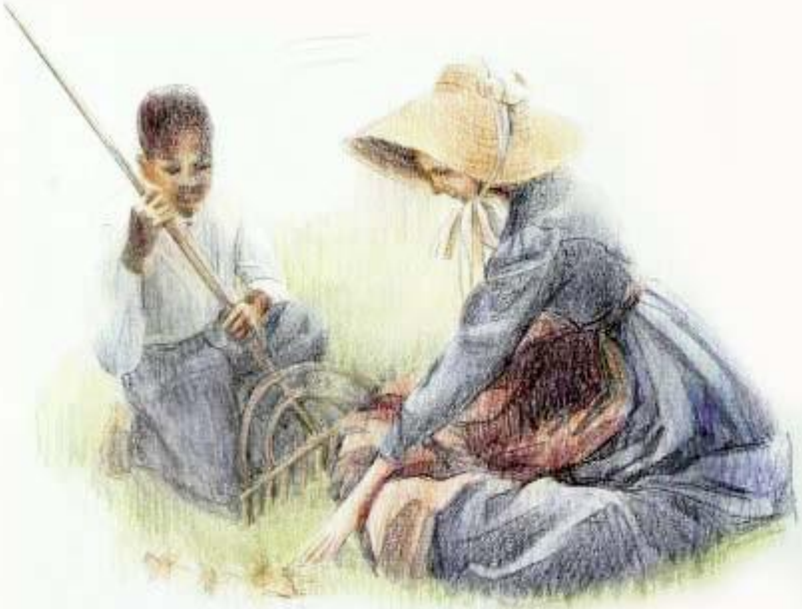

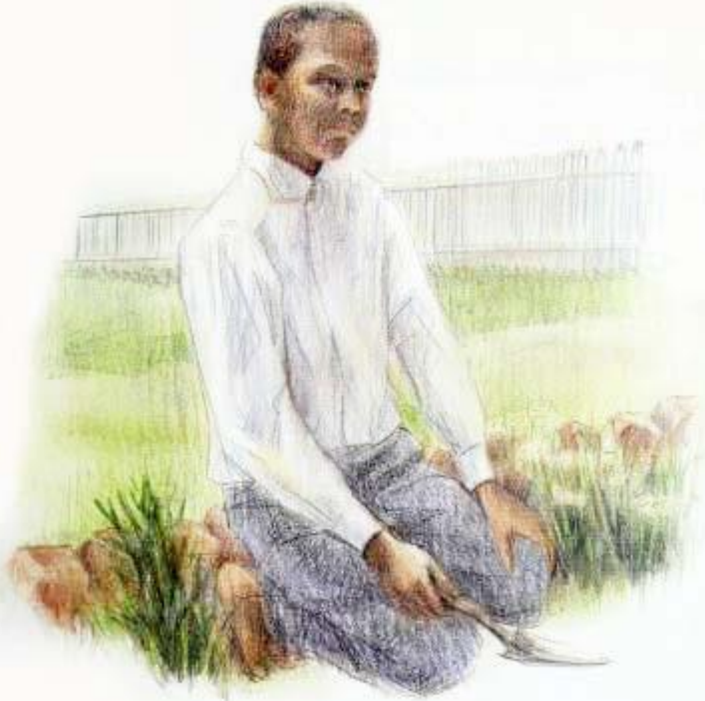

एक दिन मिसेज़ रफ्फ्नर ने बुकर से कहा कि

बाग़ से खर-पतवार निकाल दे.

शुरू में बुकर ने झटपट काम किया.

उसने एक जगह से डैंडेलाइन उखाड़ फेंके

दूसरी जगह से घास हटाई.

काम खत्म हो गया तो वह रुक गया.

बुकर मिसेज़ रफ्फ्नर के पास जाना न चाहता था.

वह जानता था कि वह क्या कहेगी.

इसलिए वह स्वयं मिसेज़ रफ्फ्नर बन गया.

काम में जो भी गलती थी वह स्वयं को दिखाने लगा.

उसे कुछ घास और खरपतवार दिखाई दिए

जो उसने हटाए नहीं थे.

उसने उन्हें उखाड़ फेंका.

उसे ज़मीन पर कुछ कागज़ के टुकड़े और

टहनियाँ भी दिखाई दीं.

मिसेज़ रफ्फ्नर ने कागज़ और टहनियों

के बारे में कुछ न कहा था.

लेकिन बुकर ने उन्हें भी हटा दिया.

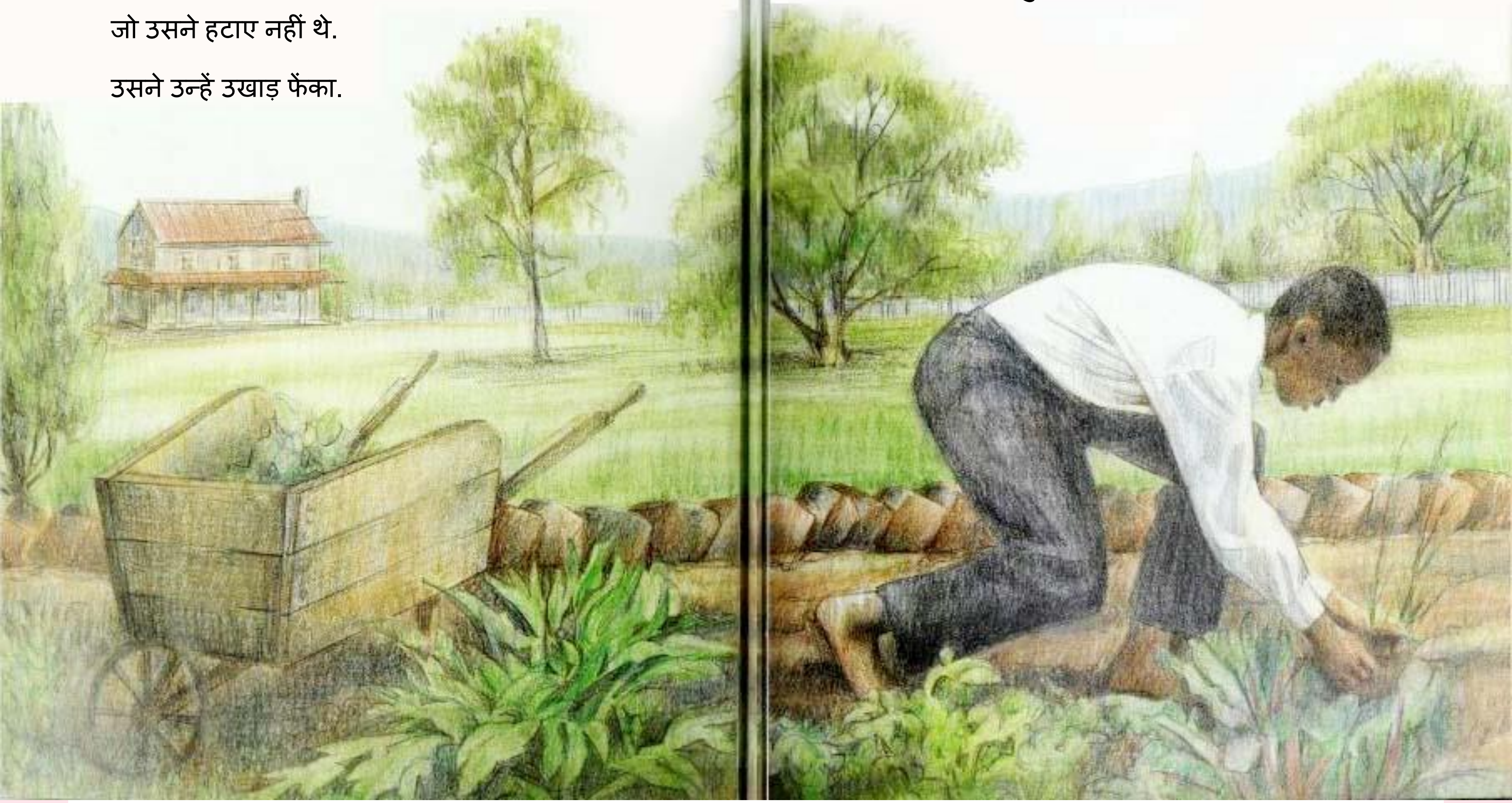

मिसेज़ रफ्फ्नर को बग़ीचा दिखाने के लिए
बुकर अब बहुत उतावला था.
लेकिन पहले उसने एक बार फिर
सारे बगीचे को ध्यान से देखा.
सब एकदम सही लग रहा था.
मिसेज़ रफ्फ्नर ने बग़ीचा देखा तो
एक अनोखी बात हुई.
मिसेज़ रफ्फ्नर पूरी तरह बदल गई.
उस दिन के बाद से वह बहुत दयालु
और स्नेही हो गई.
उसने बुकर के काम की प्रशंसा की.
कभी-कभी जब वह अपना काम सुबह ही
पूरा कर लेता, तब वह बुकर को दुपहर बाद
स्कूल भी जाने देती.

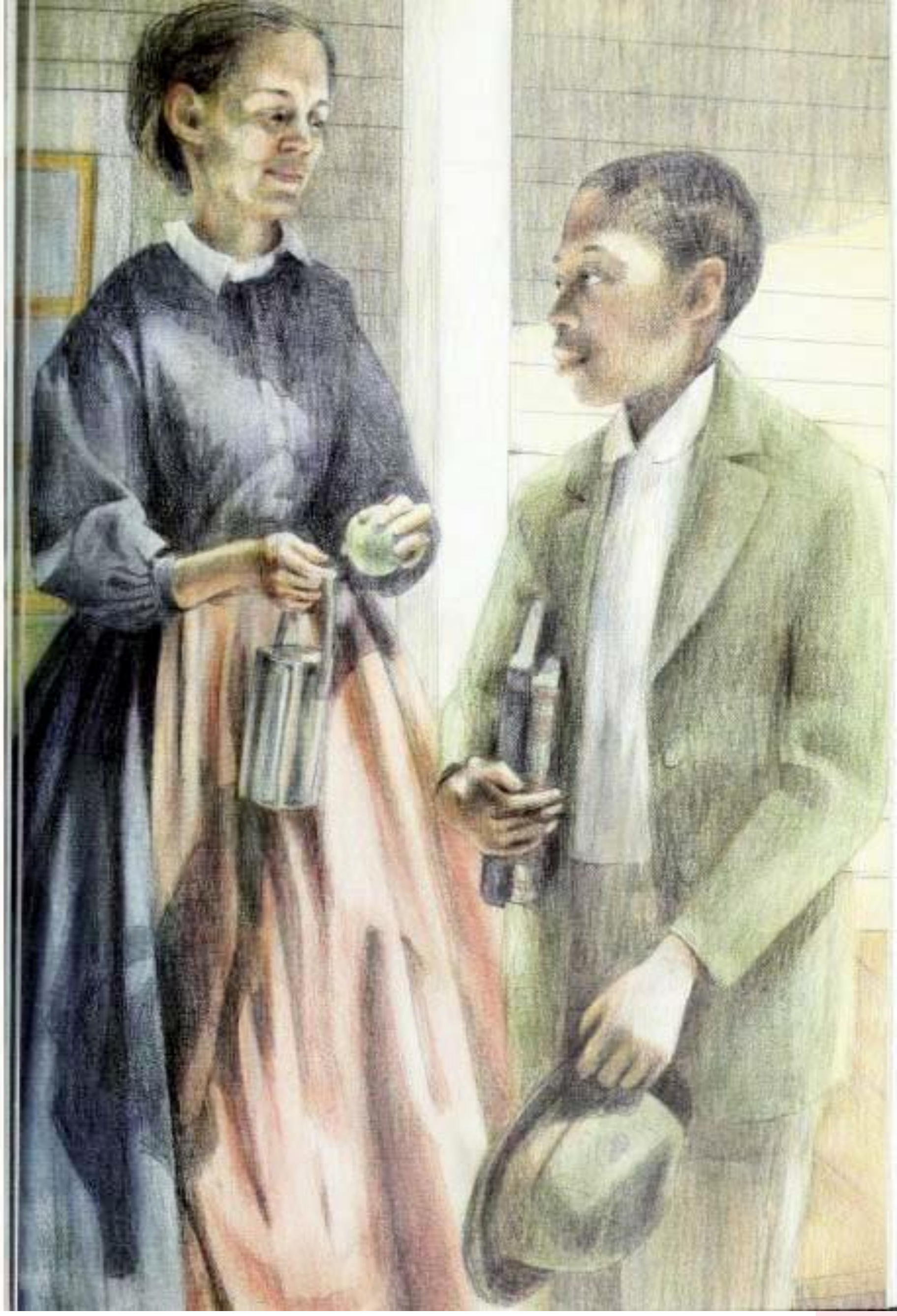

बुकर में भी परिवर्तन आ गया था.

जो भी काम उसे दिया जाता

उस पूरा करने में अधिक मेहनत करता.

अब उसे मेहनत करना अच्छा लगता था.

मिसेज़ रफ्फ्नर ने बुकर को जीवन का

सबसे मूल्यवान पाठ पढ़ाया था.

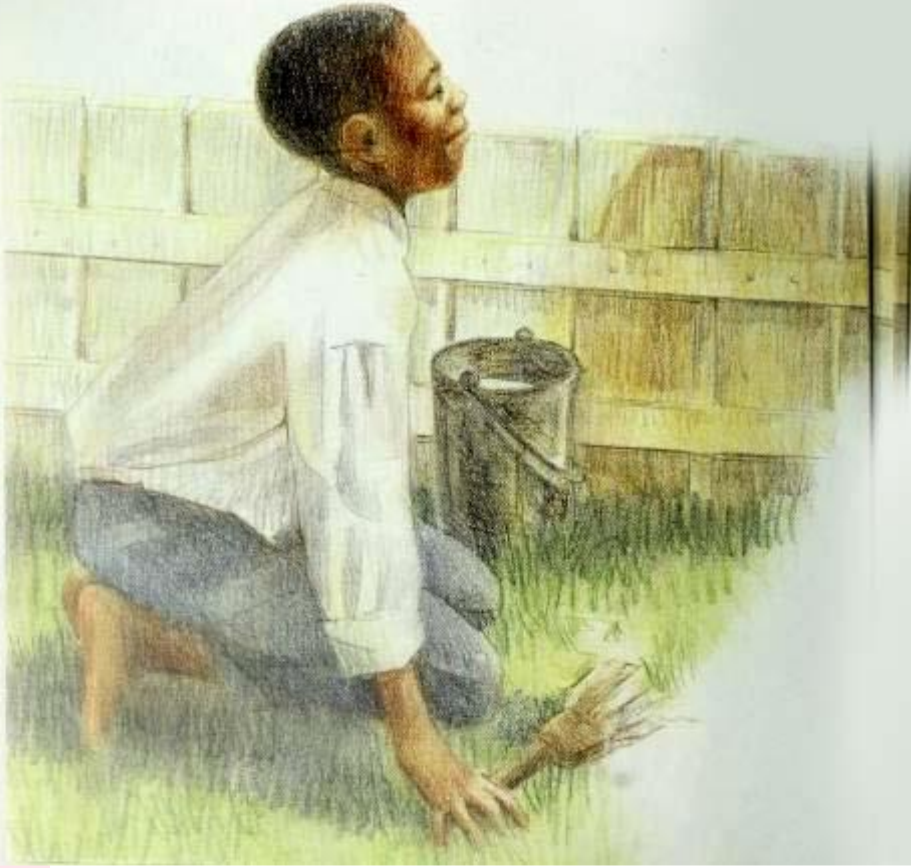

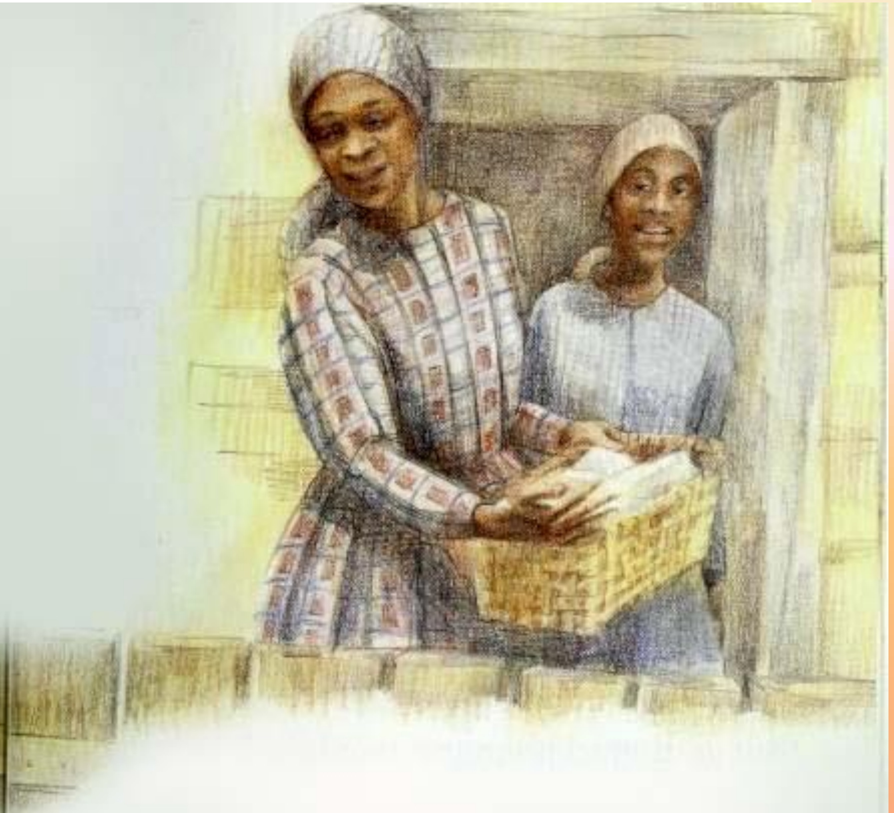

बुकर को अब अपना काम अच्छा लगता था.

लेकिन वह अभी भी हैम्पटन के स्कूल में

जाने का सपना देखता था.

अंतत: जब वह 16 वर्ष का हुआ तो

उसकी माँ ने कहा कि वह जा सकता था.

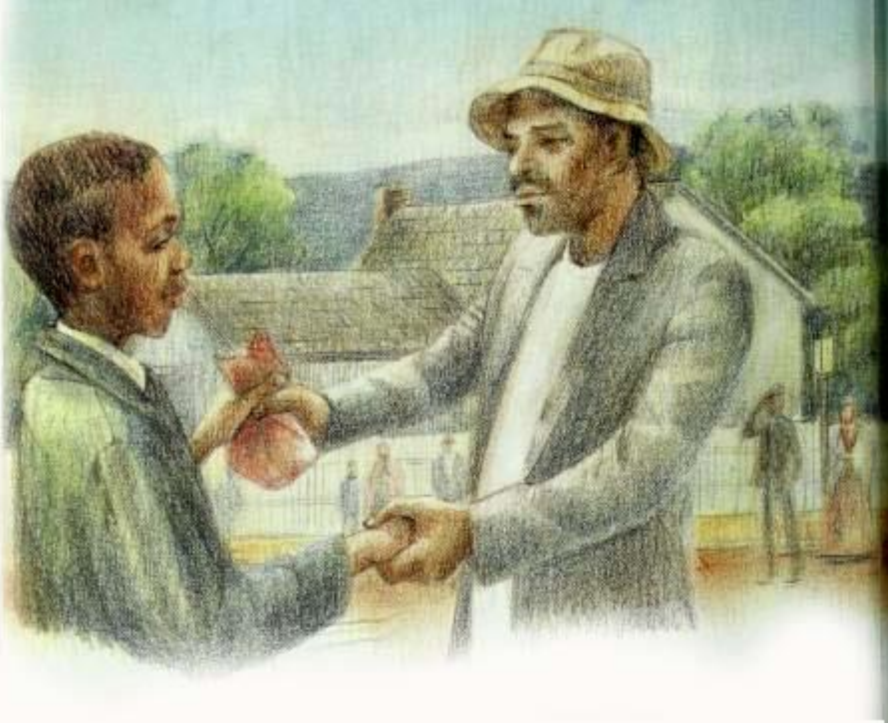

लेकिन हैम्पटन जाना आसान न था.

बुकर को यात्रा और कपड़ों के

लिए पैसे चाहिए थे.

उसने थोड़े से पैसे बचाए थे.

उसके भाई ने थोड़े से उसे दिए.

फिर नगर के लोगों ने उसे

थोड़े-थोड़े पैसे देने शुरू किये.

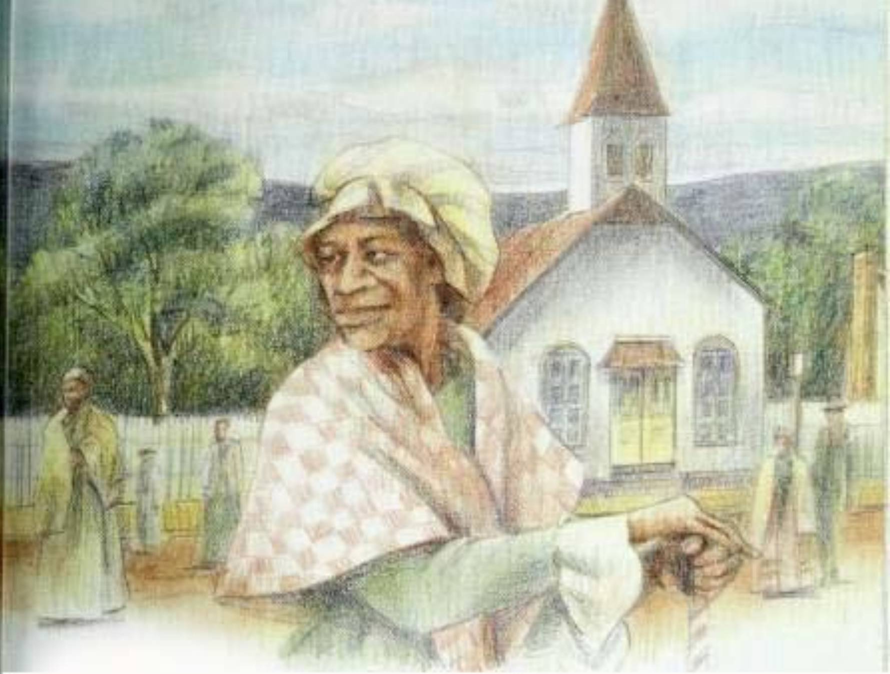

हालांकि वह सब भी गरीब थे

वह उसकी सहायता करना चाहते थे.

अधिकतर लोग गुलाम रह चुके थे.

उन्हें कभी कोई शिक्षा न मिली थी.

उन्हें इस बात का गर्व था कि

उनमें से एक शिक्षा पाने के लिए

स्कूल जा रहा था.

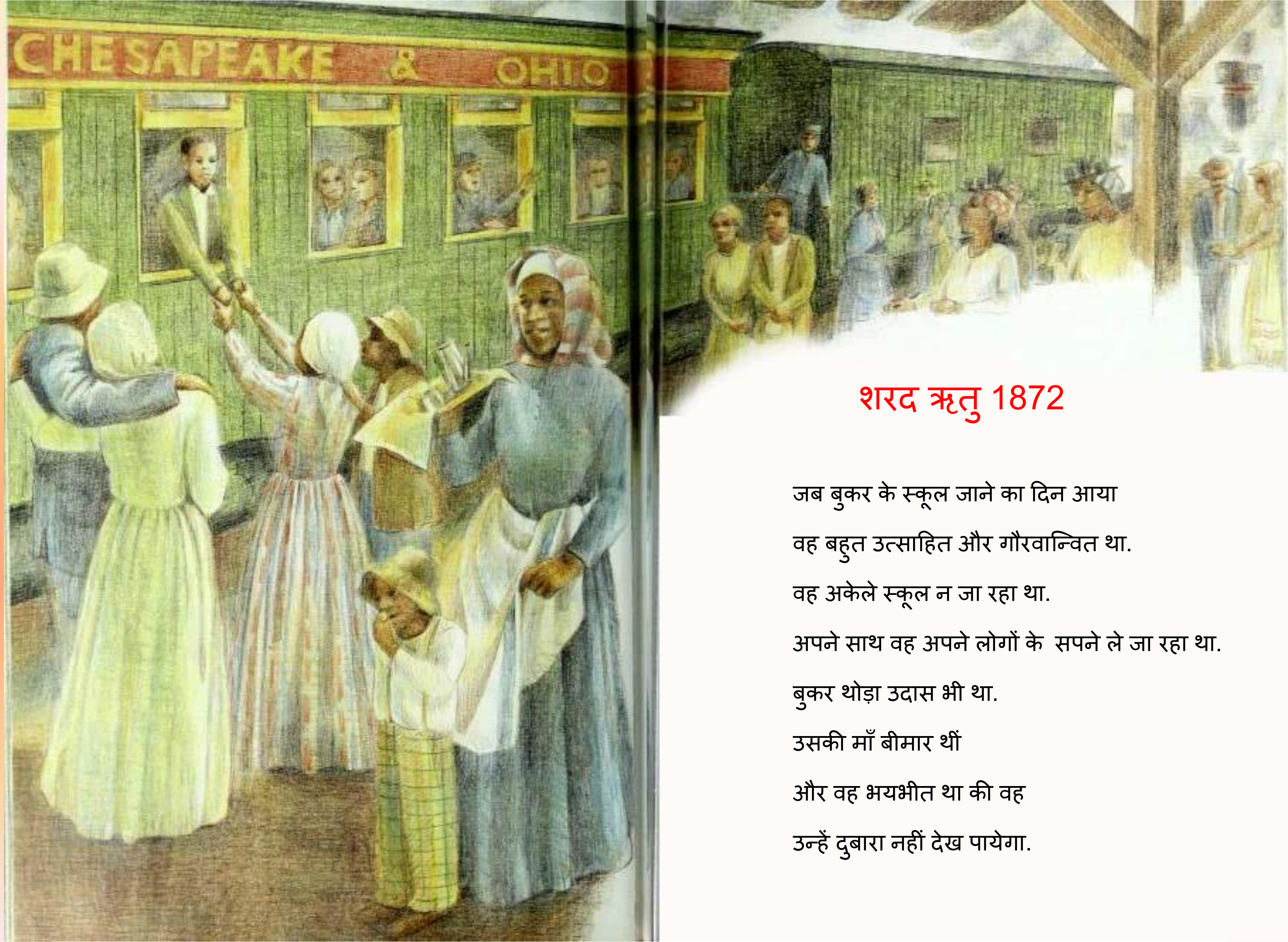
CHESAPEAKE & OHIO

शरद ऋतु 1872

जब बुकर के स्कूल जाने का दिन आया

वह बहुत उत्साहित और गौरवान्वित था.

वह अकेले स्कूल न जा रहा था.

अपने साथ वह अपने लोगों के सपने ले जा रहा था.

बुकर थोड़ा उदास भी था.

उसकी माँ बीमार थीं

और वह भयभीत था की वह

उन्हें दुबारा नहीं देख पायेगा.

हैम्पटन वर्जिनिया से 500 मील दूर था.

शुरू में बुकर ने ट्रेन से यात्रा की.

फिर वह एक घोड़ा-गाड़ी पर सवार हुआ.

लेकिन उसके पास अधिक पैसे न थे.

इसलिए आगे की यात्रा करने के लिए वह पैदल चल पड़ा.

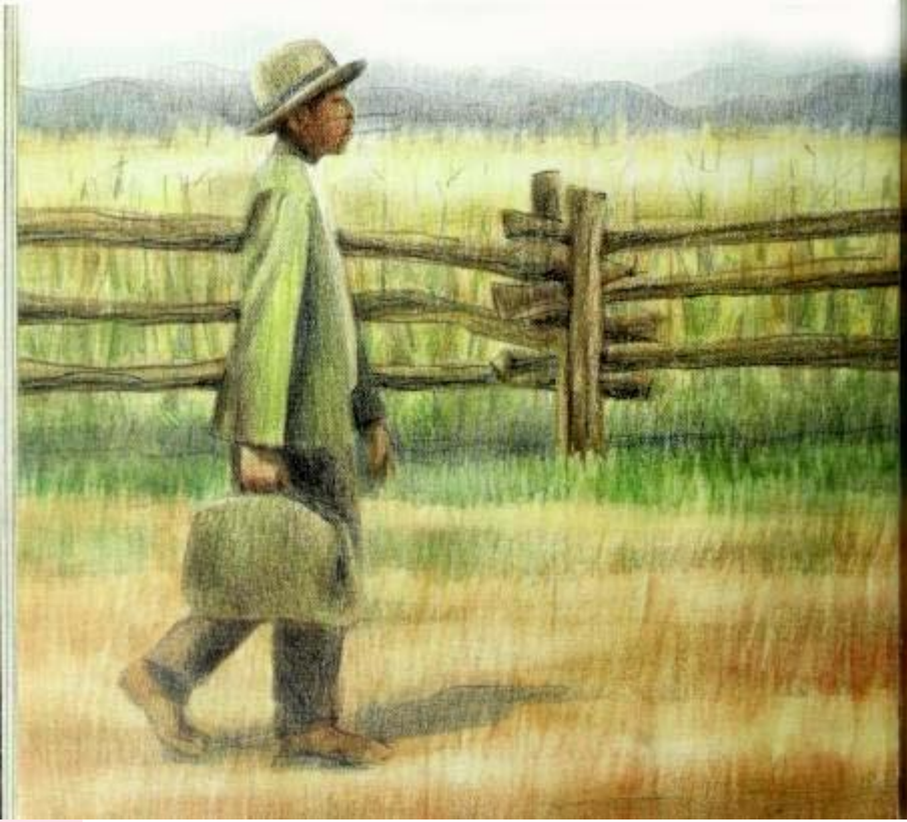

दिन-प्रतिदिन वह चलता रहा.

कभी-कभी रास्ते से जाती गाड़ियों में लोग उसे बैठा लेते थे.

रात के समय वह सड़क के किनारे

किसी खेत में सो जाता था.

वह भूखा था, थका हुआ था लेकिन वह चलता रहा.

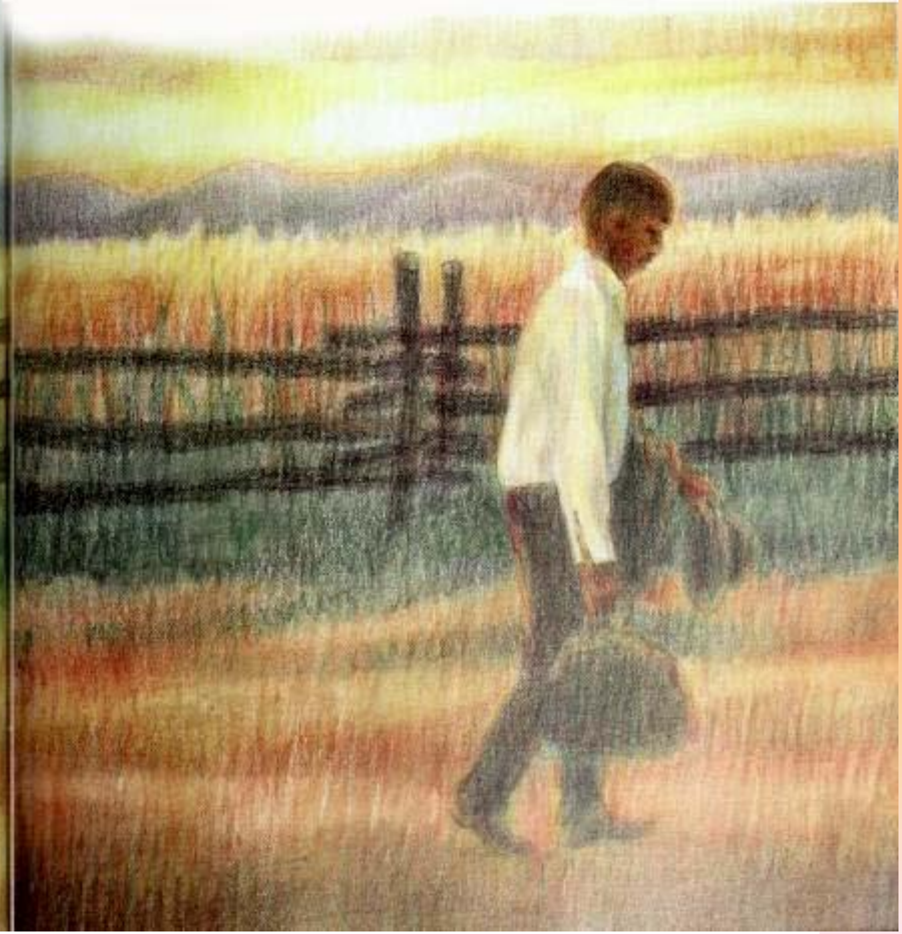

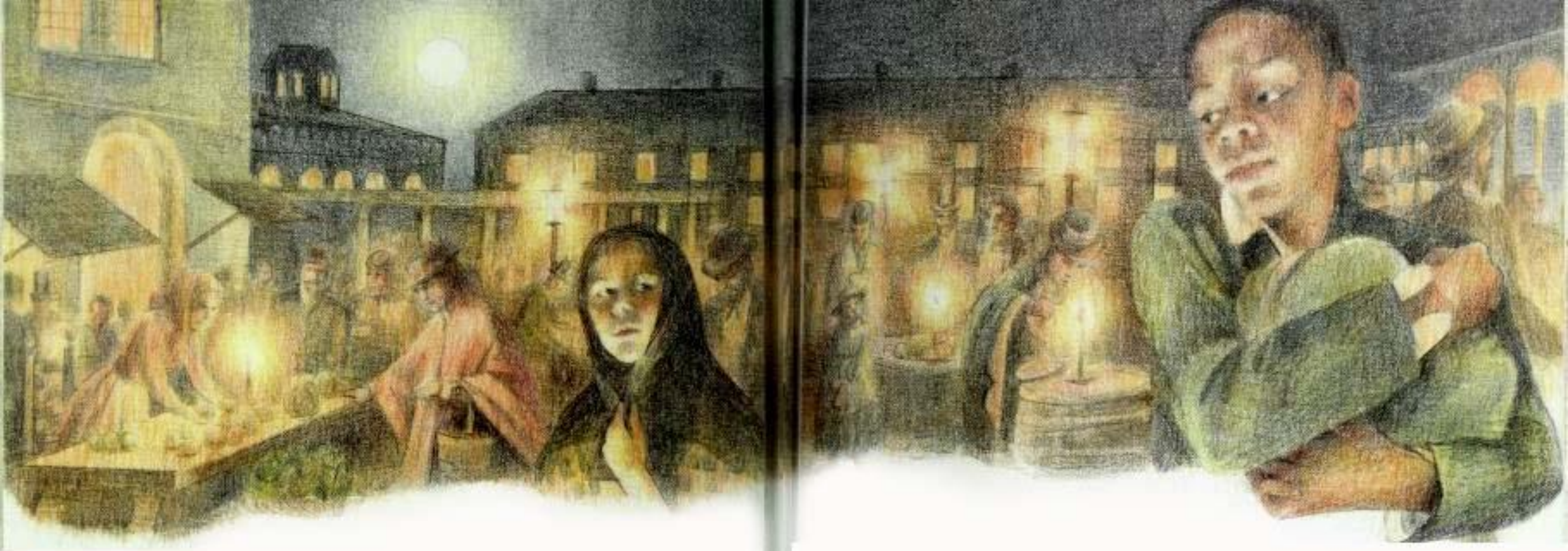

बुकर ने दो सप्ताह से अधिक यात्रा की.

एक दिन देर रात वह रिचमंड नगर पहुँचा

अब हैम्पटन सिर्फ अस्सी मील दूर था.

उसे रहने के लिए कोई जगह चाहिए थी

पर उसके सारे पैसे खत्म हो चुके थे.

कमरे का किराया चुकाने के लिए

उसने काम करने की पेशकश की.

हर किसी ने उसकी पेशकश ठुकरा दी.

बुकर गलियों में टहलता रहा.

उसने पहले कोई नगर न देखा था.

उसे सब कुछ अनोखा लगा.

अपने घर के लोगों की तुलना में

यहाँ के लोग अलग लग रहे थे.

उसने उन मित्रों के बारे में सोचा

जिन्हें उससे बहुत उम्मीदें थीं.

अब वह गौरवान्वित महसूस न कर रहा था.

वह भयभीत और अकेला था.

बुकर चलता रहा.

वह इतना थक गया कि एक कदम भी

चलना उसके लिए कठिन हो गया.

तब निकट ही पटरी के नीचे उसे

थोड़ी खाली जगह दिखाई दी.

जब कोई उसे देख न रहा था

वह उस जगह जाकर लेट गया.

रेशम के कीड़े समान वह सिकुड़ गया

और उसने सोने की कोशिश की.

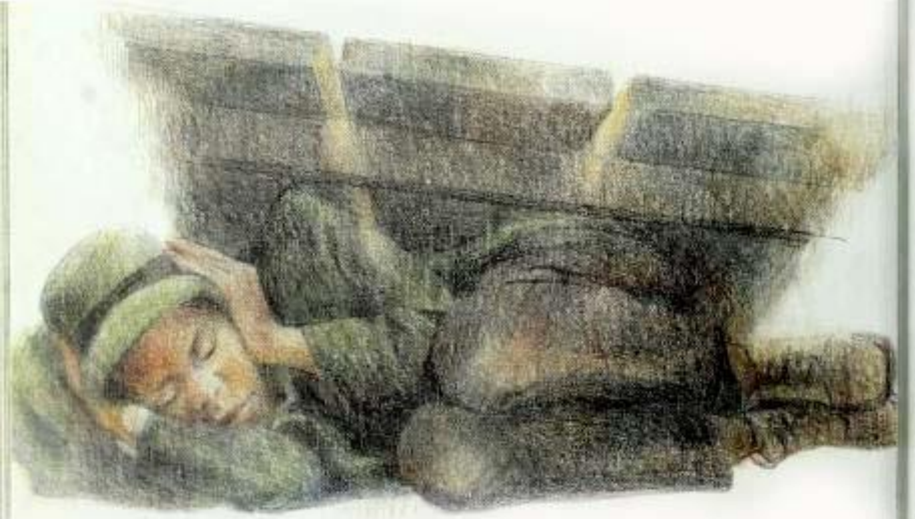

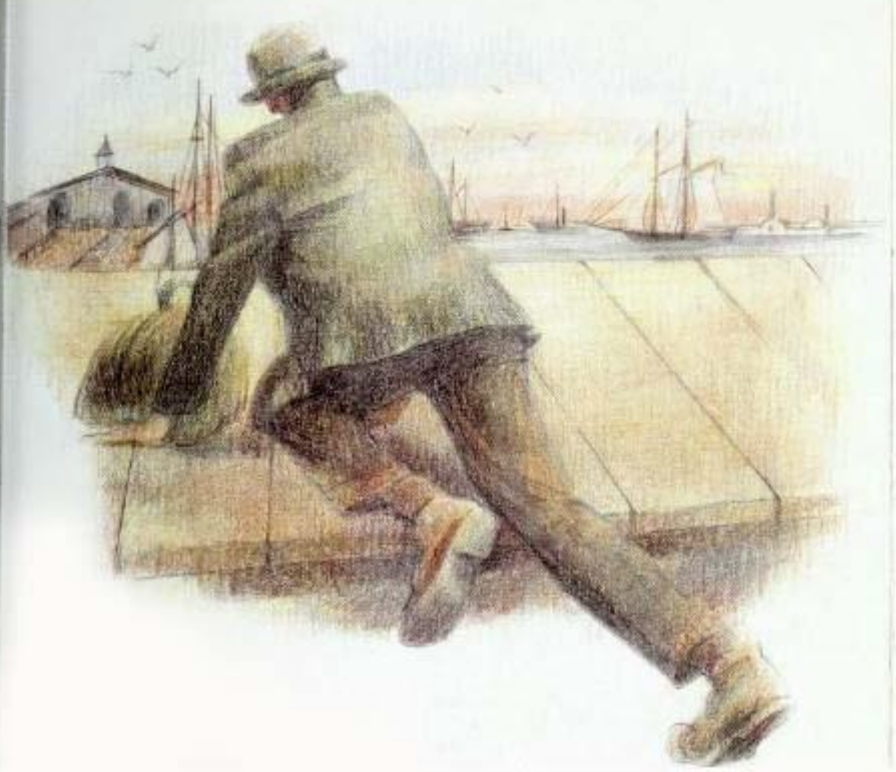

पटरी पर चलते लोगों के क़दमों की

आवाज़ उसे सारी रात सुनाई देती रही.

बुकर सोच रहा था कि रात

इतनी लम्बी कैसे हो गई थी.

आखिरकार भोर की लालिमा से

आकाश प्रकाशित हुआ.

बुकर उठ गया.

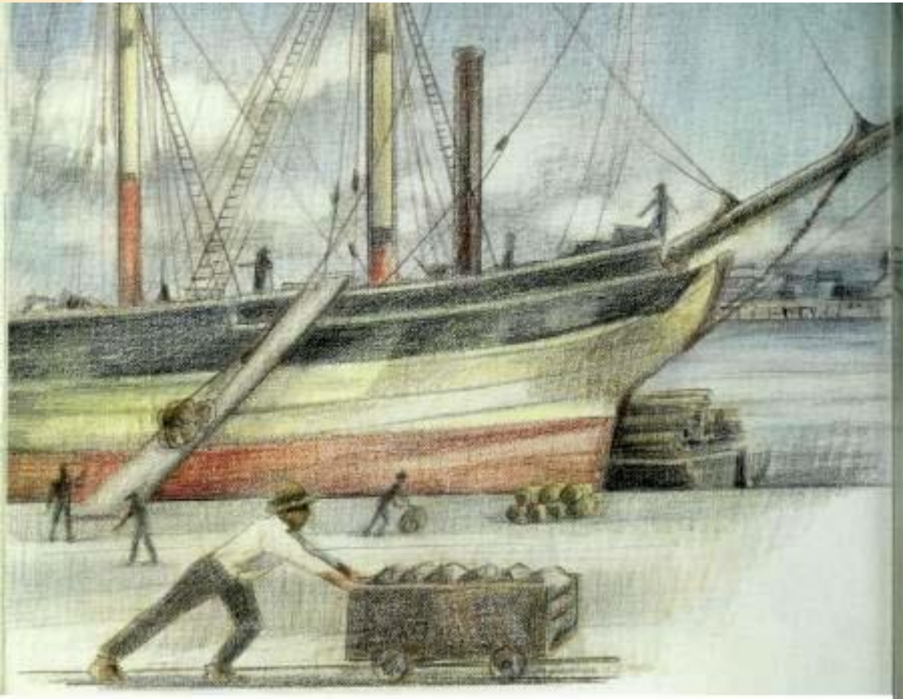

भोजन के लिए और बाकी बची यात्रा

के लिए बुकर को पैसे चाहिए थे.

वह नदी के तट पर गया.

वहाँ उसे जहाज़ से सामान उतारने का काम मिल गया.

काम कठिन था लेकिन वह अपने को

शक्तिशाली महसूस कर रहा था.

शीघ्र ही मैं हैम्पटन पहुँच जाऊँगा,

उसने अपने आप से कहा.

उसने कई दिनों तक जहाज़ पर काम किया.

पैसे बचाने के लिए हर रात वह पटरी के नीचे सोता.

अंततः उसके पास पर्याप्त पैसे इकट्ठे हो गये.

बुकर घोड़ा-गाड़ी में सवार हो गया

और हैम्पटन पहुँच गया.

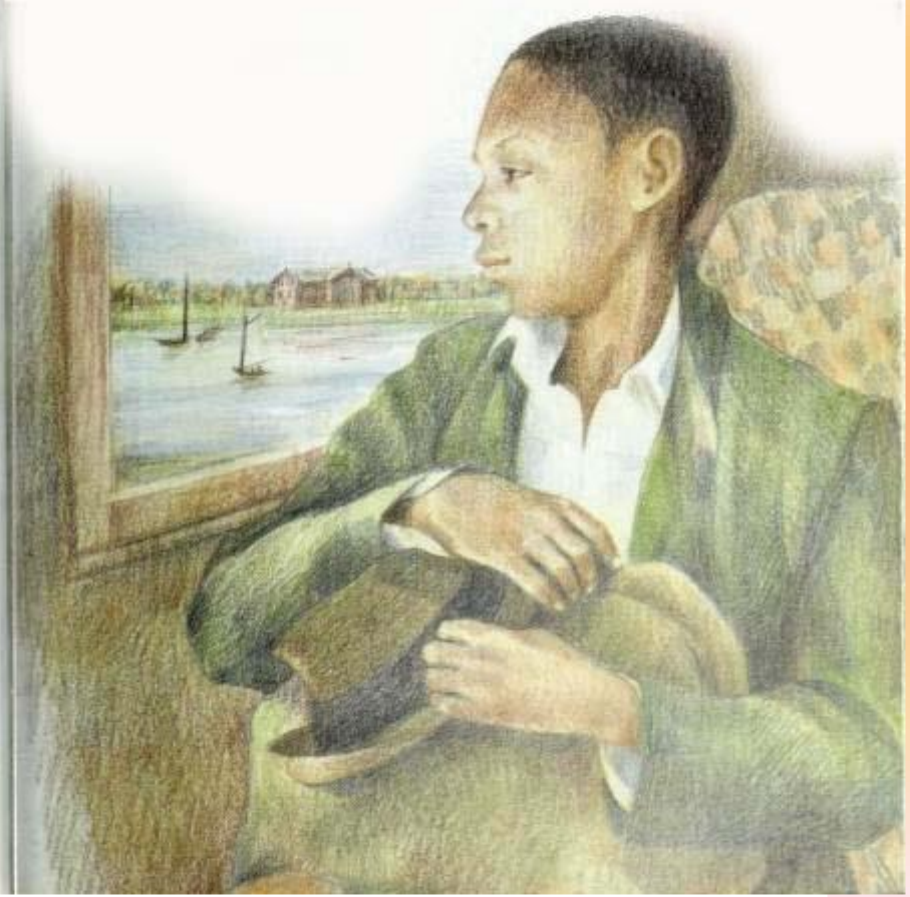

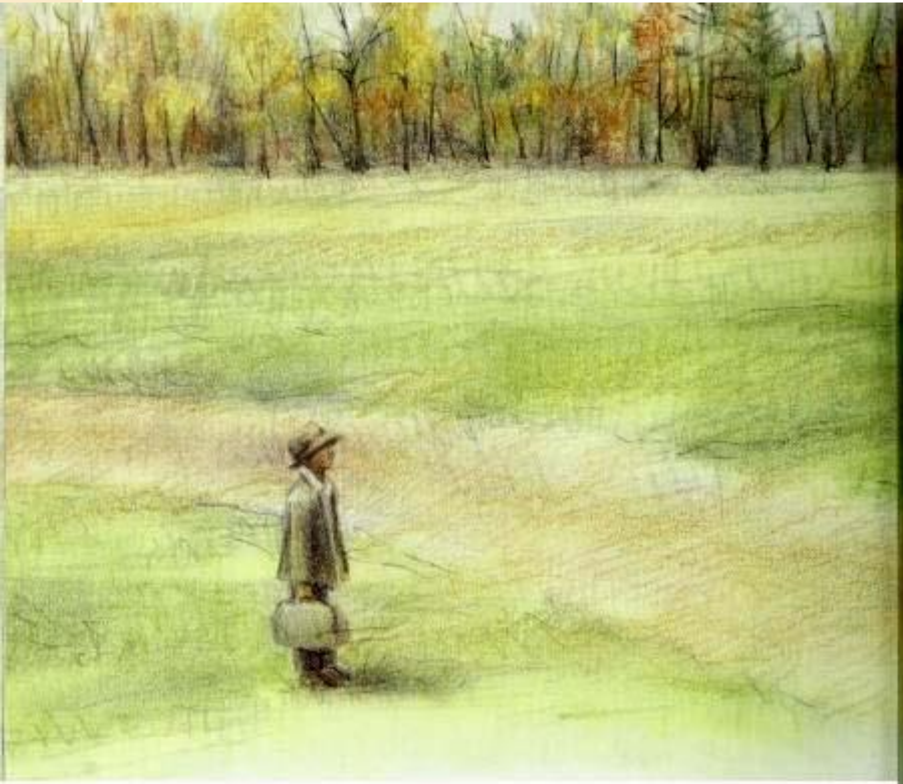

हैम्पटन पहुँच कर बुकर ने
शीघ्र ही स्कूल ढूँढ़ लिया.
उसने लाल ईंटो से बनी
स्कूल की इमारत को देखा.
उसे वह संसार की सबसे सुन्दर
इमारत लगी.

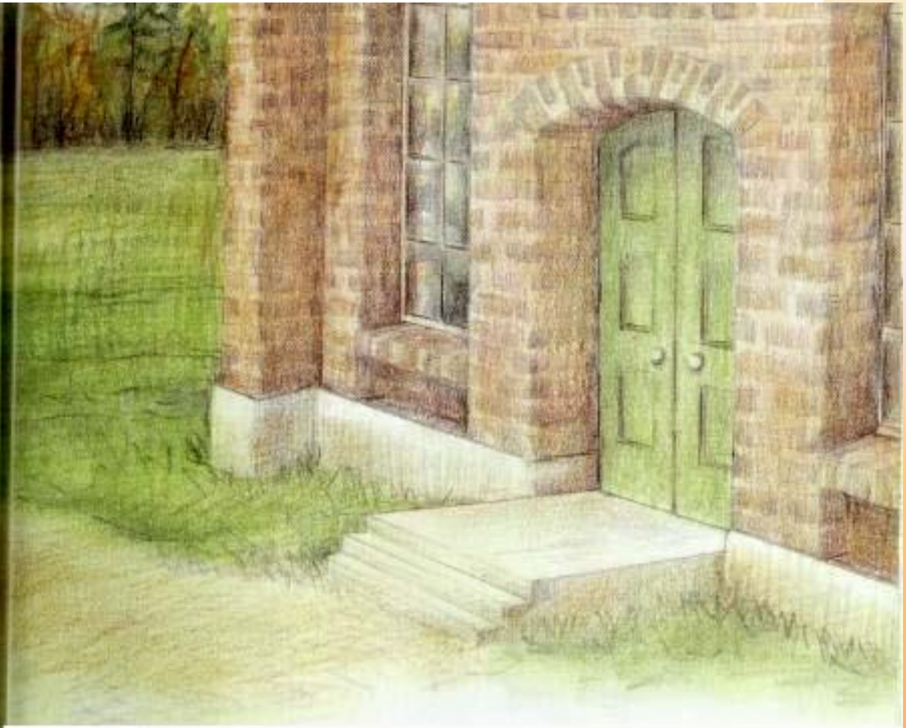

लेकिन बुकर की समस्याएँ अभी समाप्त न हुई थीं
स्कूल में भरती होने के लिए उसे
प्रधानाचार्य से निवेदन करना था.
बुकर जानता था कि वह कितना गंदा दिखाई दे रहा था.
उसने 500 मील की यात्रा की थी.
हफ्तों से उसने न तो स्नान किया था न कपड़े बदले थे..

बुकर की प्रधानाचार्य से भेंट हो ही गई.

उनका नाम मिस मैकि था.

उन्होंने उसे देखा और त्योरी चढ़ा ली.

उन्होंने उसे प्रतीक्षा करने के लिए कहा.

कई घंटे बीत गये.

दूसरे लड़के आये और भरती हो गये.

बुकर प्रतीक्षा करता रहा.

उसका दिल डूबने लगा.

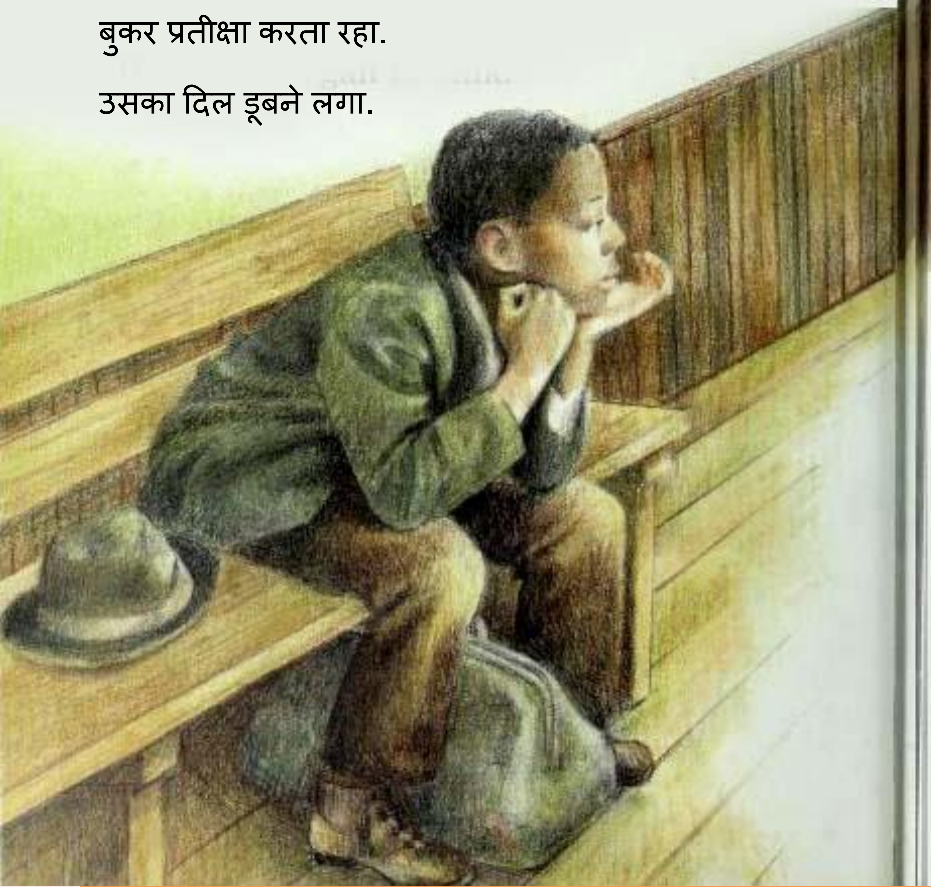

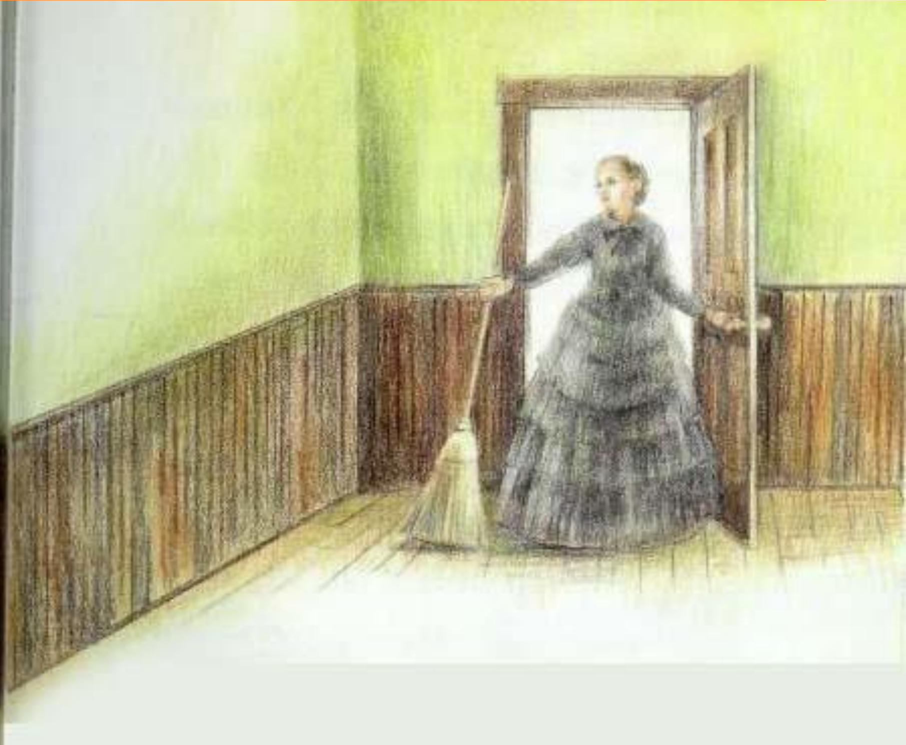

अंतत: मिस मैकि ने उसे एक झाड़ू दिया और

बगल की कक्षा की सफाई करने को कहा.

बुकर उछल कर खड़ा ही गया,

उसने झाड़ू पकड़ा और झटपट चला गया.

वह जानता था कि सफाई करने में वह माहिर था.

मिस रुफ्फनर के लिए काम करने के बाद

वह इस काम में निपुण हो गया था.

बुकर ने तीन बार झाड़ू लगाया. उसके बाद

उसने कपड़े से बची हुई धूल साफ़ की.

फिर उसने डेस्कों को और लकड़ी से बनी

हर वस्तु को और कमरे के हर कोने

को बड़े ध्यान साफ़ किया.

वह मिस मैकी के पास गया और उन्हें

बताया कि उसने काम पूरा कर लिया था.

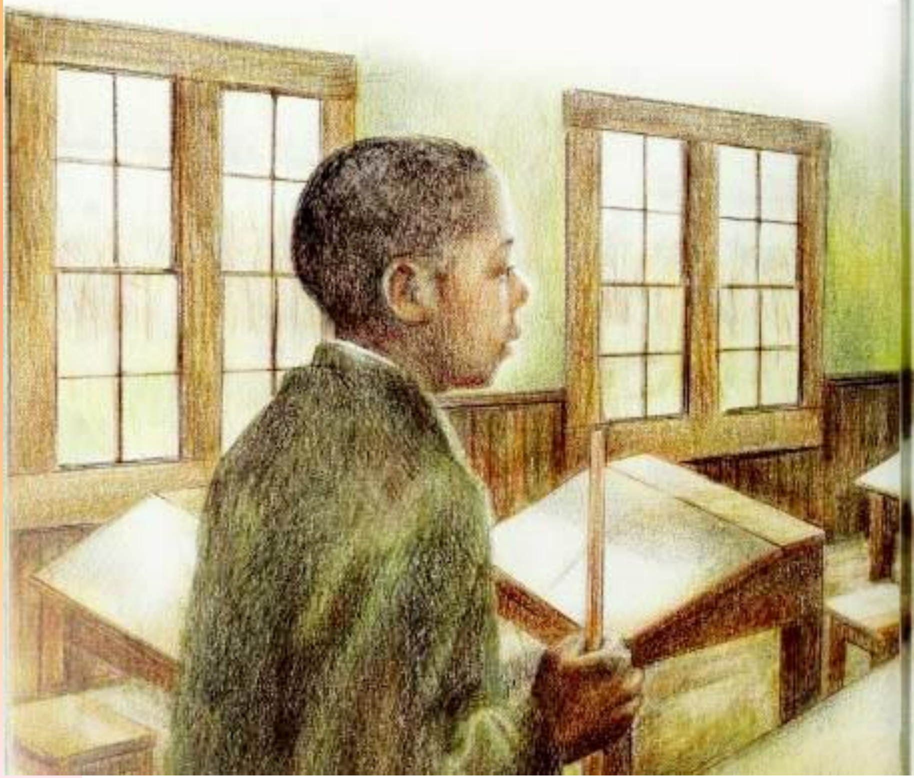

वह कक्षा की ओर चल दीं.

बुकर उनके पीछे-पीछे आया.

मिस मैकी ने सारे कमरे का चक्कर लगाया.

दुपहर के सूर्य के प्रकाश में लकड़ी की चीज़ें चमक रही थीं.

मिस मैकि दरवाजे के निकट आकर रुक गईं.

उन्होंने अपना रुमाल निकाला.

फिर उन्होंने चौखट के ऊपर रुमाल लगाया.

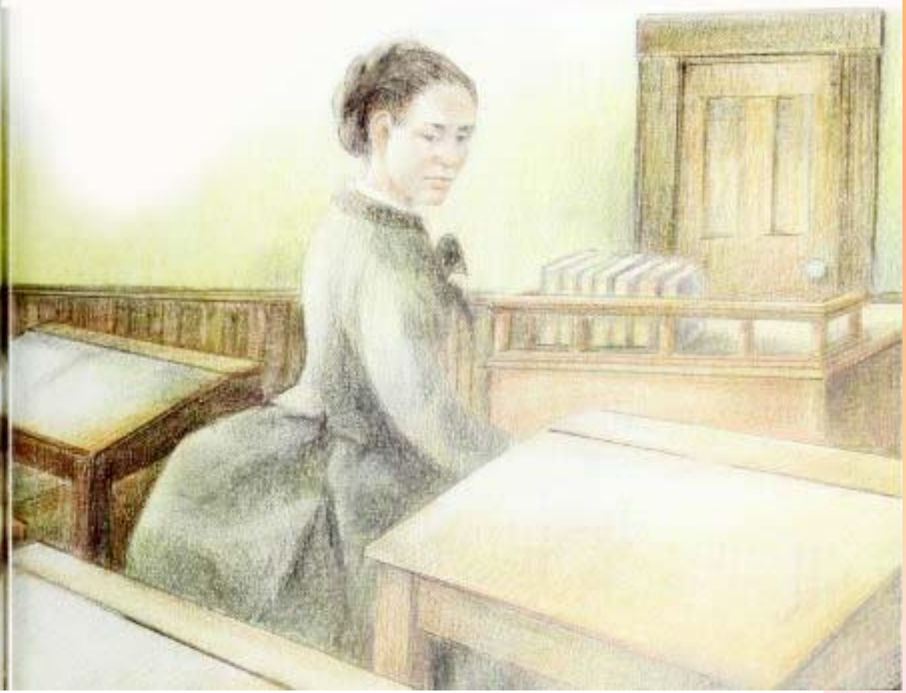

उन्होंने रुमाल को देखा.

उस पर धूल का एक कण भी न लगा था.

हल्की सी मुस्कराहट उनके चेहरे पर उभरी.

"मुझे लगता है तुम स्कूल में भर्ती होने के योग्य हो,"

उन्होंने कहा.

प्रसन्नता और गर्व से बुकर का चेहरा खिल गया.

उसका स्वप्न सच ही गया था.

कल सुबह वह स्कूल जाएगा.

बुकर टी वाशिंगटन ने तीन वर्षों तक हैम्पटन के स्कूल में पढ़ाई की. फिर वह अन्य अफ़्रीकी-अमरीकियों के बच्चों के अध्यापक बन गये. उन्होंने अपने गृह-नगर में दो वर्षों तक बच्चों को पढ़ाया. उसके बाद लौट कर हैम्पटन स्कूल में पढ़ाया.

1881 में अलबामा में स्थित अश्वेत बच्चों के एक स्कूल में उन्हें प्रिंसिपल नियुक्त किया गया. उनकी देखरेख में टस्कीगी इंस्टिट्यूट अमरीका के प्रसिद्ध स्कूलों में से एक स्कूल बन गया.

टस्कीगी की सफलता के कारण बुकर अमरीका के अश्वेतों के लोकप्रिय नेता बन गये. वह एक अच्छे वक्ता थे और उन्होंने अमरीका में कई जगह भाषण दिए. वह शिक्षा के बारे में बात करते थे और यह बताते थे कि किस प्रकार श्वेत और अश्वेत लोग मिल कर रह सकते हैं. बुकर टी वाशिंगटन को लोग महान अध्यापक और नेता के रूप में याद रखेंगे.

महत्वपूर्ण तिथियाँ

1856-बुकर टी वाशिंगटन का हेल्स फोर्ड में जन्म (उनकी सही जन्म तिथि की जानकारी नहीं है)

1865- अपने परिवार के साथ माल्डन, पश्चिम वर्जिनिया आ गये.

1872-1875- हैम्पटन स्कूल में शिक्षा पाई.

1875- हैम्पटन शिक्षा पूरी कर स्कूल में पढ़ाने के लिए माल्डन आये.

1879- हैम्पटन में बच्चों को पढ़ाना शुरू किया.

1881-अल्बामा में टस्कीगी इंस्टिट्यूट खोला.

1882-फैनी स्मिथ के साथ विवाह.

1883-बेटी पोर्शिया का जन्म.

1884- फैनी वाशिंगटन का निधन.

1885-ओलिविया डेविडसन के साथ विवाह. बेटे बुकर टी. जूनियर का जन्म.

1889-बेटे अर्नेस्ट का जन्म. ओलिविया का निधन.

1892-मर्गेर्ट मर्रे से तीसरा विवाह.

1895-बुकर का प्रसिद्ध एटलांटा कोम्प्रोमाईज़ भाषण.

1900-नेशनल नीग्रो लीग की स्थापना.

1901-बुकर ने अपनी आत्मकथा ‘अप फ्रॉम स्लेवरी’ प्रकाशित की.

1915-बुकर का 13 नवम्बर के दिन टस्कीगी, अल्बामा में देहांत.